Q. Critically examine Descartes' arguments for the existance of God. ***

or,

Explain and examine Ontological proof for the existance of God as given by Descartes.

देकार्त अपने दर्शन का प्रारंभ संदेह विधि से किया। वह इस विधि को इसलिए अपनाया था ताकि इसके सहारे First principle तक पहुँचा जा सके जिसकी सत्यता निर्विवाद और निःसंदेह हो। यही कारण था की आरम्भ में इन्होंने सभी Accepted सत्यों पर ही नहीं विश्व और अस्तित्व पर भी संदेह व्यक्त किया। परन्तु cogito ergo sum की

Scanned with CamScanner

स्थापना के बाद उन्होंने एक सत्य को सिद्ध कर दिया चिंतन कर्ता के रूप में चिंतक का अस्तित्व है। परन्तु इसके सामने एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो गया कि जिन सत्यों को संदेह द्वारा उन्होंने अस्वीकार कर दिया है, उसकी पुर्नस्थापना किस प्रकार हो। Cogito ergo sum के द्वारा उन्होंने सिर्फ अपने अस्तित्व की पुष्टि कर पाया, फलस्वरूप दर्शन के क्षेत्र में इसे Solipsism की संज्ञा प्रदान की गई। इसके द्वारा ज्ञाता अपने अस्तित्व को छोड़कर विश्व के किसी अन्य सत्ता की व्याख्या नहीं हो पाती फलस्वरूप यह अन्य दार्शनिकों के लिए असंतोष जनक प्रतीत हुआ। इसलिए इस स्थल पर आकर यह सोचने को बाध्य हुआ कि इस समस्या रूपी परिधि से बाहर कैसे निकला जाए।

इस उलझन को सुलझाने के लिए देकार्त ने ईश्वर के अस्तित्व का सहायता लिया। इन्होंने ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने से पहले विभिन्न प्रकार के Idea का वितरण देते हैं और उसी मैसेएक को सर्वश्रेष्ठ बतलाकर, इसी से ईश्वर की सत्ता को निकालते हैं तथा फिर विभिन्न तर्कों के माध्यम से उसे सिद्ध करते हैं। देकार्त का कहना है कि अपनी आत्मा की ओर झांको। यदि हम अपने भीतर झांके तो भीतर तीन प्रकार के प्रत्ययोंको पाएंगे। कुछ प्रत्यय अनुभवप्रसूत हैं। अनुभवप्रसूत प्रत्यय बाहरी वस्तुओं के विषय में होते हैं। कुछ प्रत्यय हमारी कल्पना की उपज है। इसे कल्पना प्रसूत प्रत्यय कहा जाता है। तीसरे प्रकार के प्रत्यय को जन्मजात प्रत्यय कहा जाता है। जन्मजात प्रत्यय स्पष्ट और सुबोध होते हैं। इन प्रत्ययों में एक प्रत्यय ईश्वर के संबंध में है कि "ईश्वर शाश्वत, स्वतंत्र, सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान सर्वव्यापी, सृष्टिकर्ता, संहर्ता, सत्य, शिव, पालनकर्ता पूर्ण, निरपेक्ष और अनंत है"।

देकार्त द्वारा दी गई ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण को निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है :-

1. कार्य-कारणमूलक तर्क : कार्य-कारण नियम के अनुसार कोई भी घटना अकारण नहीं घटती अर्थात प्रत्येक कार्य का कोई कारण और प्रत्येक कारण का कोई कार्य अवश्य होता है। इसी नियम से एक दूसरा नियम निकलता है कि कारण कार्य से कम नहीं हो सकता। दूसरे नियम को नहीं मानने पर पहले नियम का उल्लंघन हो जाता है। यदि कार्य कारण से अधिक हो जाए तो कार्य में जो आधिकता होगी उसका कारण कुछ भी नहीं होगा। इसलिए कारण कार्य के अनुपात में होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

इन्हीं नियमों का प्रयोग देकार्त ने ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए किया है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में ज्ञान होता है कि विश्व में कोई पूर्ण सत्ता है, यह पूर्ण सत्ता अनन्त गुण अनन्त शक्ति और अनन्त ज्ञान से परिपूर्ण है। नियमतः इस प्रत्यय का भी कोई न कोई कारण अवश्य होगा साथ ही इसका कारण भी उतना ही पूर्ण होगा। इन्द्रिय का शक्ति सीमित है तथा इसका संबंध वर्तमान से है अतः इन्द्रिय द्वारा असीम सत्ता का विचार नहीं उत्पन्न हो सकता। इस विचार का कारण हम या हमारे माता-पिता नहीं हो सकते क्योंकि हमलोग अपूर्ण और सीमित हैं इसलिए पूर्ण और असीम सत्ता का विचार उत्पन्न करने की शक्ति इसमें नहीं है। कार्य-कारण का परिणाम बराबर होना चाहिए। अतः पूर्ण सत्ता के विचार का कारण कोई पूर्ण सत्ता ही होगा। विचार के अनुरूप कोई ईश्वर अवश्य ही है, अन्यथा ईश्वर संबंधी विचार एक अकारण घटना बन जाएगी।

2. सत्तामूलक तर्क : देकार्त के अनुसार पूर्ण ईश्वर का ज्ञान ही उसके सत्ता का द्योतक है। ईश्वर के विषय में ज्ञान मात्र से ही उसकी सत्ता सिद्ध होती है। जैसे किसी त्रिभुज के ज्ञानमात्र से ही सिद्ध है कि उनके तीनों कोण मिलकर दो समकोण के बराबर होते हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में हमारे मन में जो ज्ञान होता है वह ज्ञान एक पूर्ण सत्ता का ज्ञान है। पूर्ण उसी को कहते हैं जिसमें किसी प्रकार का अभाव न हो। इससे स्पष्ट हो जाता है कि पूर्ण और अनन्त की कल्पना में ही ईश्वर के अस्तित्व का समावेश हो जाता है। ~~यदि ईश्वर के~~

3. सृष्टिमूलक तर्क : देकार्त सम्पूर्ण विश्व के कारण के रूप में ईश्वर को प्रतिस्थापित करते हैं। उनके अनुसार इस विराट विश्व का कारण हमलोग नहीं हो सकते। यह हमारी कृति शक्ति के परे की बात है। यह सम्पूर्ण विश्व एक कार्य है। इसका भी कोई कारण अवश्य होगा उस कारण रूप में ईश्वर की सत्ता स्वयं सिद्ध है।

4. निगमनात्मक तर्क : स्पष्ट और निस्सन्देह सत्य को ही देकार्त सत्य मानते हैं। इसी आधार पर उन्हें सर्वप्रथम आत्मा की सत्य अनुभूति प्राप्त हुई। इसकी सत्ता स्वतः सिद्ध है तथा जिस पदार्थ की अनुभूति आत्मा के समान स्पष्ट एवं सुबोध हो वह भी अस्तित्ववान है। अतः ईश्वर की अनुभूति स्पष्ट एवं सुबोध है अतः इसलिए ईश्वर अस्तित्ववान है।

* ईश्वर को सिद्ध करने के लिए देकार्त ने एक और प्रमाण की सहायता लिया है। उनका कहना है कि हमारे अस्तित्व का कारण कौन है?

Scanned with CamScanner

हम स्वयं नहीं हो सकते क्योंकि हम अपूर्ण हैं। यदि हम अपने अस्तित्व का कारण स्वयं होते तो स्वयं को पूर्ण बनाते क्योंकि हमारे मन में पूर्णता का विचार मौजूद था। हमारे अस्तित्व का कारण हमारे माता-पिता भी नहीं हो सकते क्योंकि इससे अनावस्था का दोष उत्पन्न हो जाएगा इससे एक चक्र उत्पन्न हो जाएगा की माता-पिता का माता-पिता फिर उसका माता पिता प्रश्न ज्यों के त्यों रह जाएगा। लेकिन इस चक्र का कहीं अंत होना चाहिए जो अंतिम कारण होगा, वही ईश्वर हैं।

* आलोचना : देकार्त के इतने प्रयास के बावजूद उनका यह सिद्धांत आलोचना से परे नहीं है। उनके इस प्रमाण का कई विद्वान ने आलोचना किया है जो इस प्रकार है :- ⓐ ईश्वर की सत्ता बुद्धि से सिद्ध नहीं की जा सकती। वस्तुतः, ईश्वर आस्था का विषय है। ⓑ कांट का कहना है कि संज्ञा और प्रत्यय दो चीजें हैं। केवल विचार मात्र से किसी चीज का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। विचार मात्र से किसी चीज का अस्तित्व सिद्ध होता तो भिखमंगे भीख नहीं मांगते। ⓒ देकार्त के अनुसार मन से स्वतंत्र कोई सत्ता है, परन्तु वह यह नहीं सिद्ध कर पाते हैं कि वह सत्ता ईश्वर ही है। ⓓ देकार्त का यह प्रमाण मौलिक नहीं है। इससे पहले भी संत ऑगस्टाइन ने कहा था कि ईश्वर का प्रत्यय ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करता है। ⓔ देकार्त अस्तित्व को ईश्वर का एक गुण मानते हैं। जिस तरह ईश्वर में अन्य सारे गुण हैं उसी तरह एक अस्तित्व भी है। किन्तु यह बात उचित नहीं है। अस्तित्व गुण नहीं गुण का आधार है।

* निष्कर्ष : इन आलोचनाओं के बावजूद देकार्त का 'ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण' को अस्वीकारा नहीं जा सकता। इनके बाद आने वाले कई दार्शनिकों ने इनके प्रमाणों को सराहा है। भारतीय दार्शनिक राधाकृष्णन ने आलोचकों को कड़ी जवाब देते हुए देकार्त के मत का पुष्टि करते हैं। अनेक भारतीय दार्शनिक ने भी देकार्त के समान ही ईश्वर को सिद्ध करने का प्रयास किया है। देकार्त का ईश्वर पूर्ण, अनन्त तथा सर्वज्ञ है। ईश्वर ही सृष्टि का कर्ता है, दया का धाम तथा शुभ का आगार है। इनके तर्कों में ईश्वर का स्रष्टिकर्ता होना सबसे बलवान तर्क माना जाता है। वैसे सभी ईश्वरवादी दार्शनिक ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं तथा सृष्टि से स्रष्टा की सत्ता अनिवार्य मानते हैं। देकार्त का इस तरफ का प्रयास अपने आप में अनूठा है।

Scanned with CamScanner